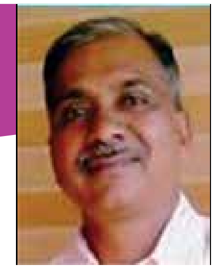
# आकलन का बदलता नजरिया

d- vkj- 'kek



इन दिनों स्कूलों में सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पर बहुत बहस हुई है। कुछ लोगों के विचार में आकलन की पुरानी विधियाँ प्रभावहीन हो गई हैं और उसकी पूरी कार्यप्रणाली परीक्षा की व्यवस्था में उलझ गई है जिस पर सब कुछ निर्भर करता है। आकलनों की पुरानी व्यवस्थाएँ विद्यार्थियों को यह दिखाने में असमर्थ थीं कि उनके सीखने से दृष्टिकोणों को बदलने में किस तरह सहायता मिली थी। न ही वे पालकों को यह दर्शाने में समर्थ होती थीं कि उनके बच्चे क्या जानते थे और क्या नहीं जानते थे। परीक्षाएँ यह नहीं दिखा पाई हैं कि किसी बच्चे के ज्ञान का विस्तार कितना है और उसने कितनी दूर तक प्रगति की है। यह बाल मनोविज्ञान के सर्वथा प्रतिकूल है। किसी प्रकार एक आम धारणा बन गई है कि परीक्षा का मूल्य इसमें निहित है कि वह बच्चे के मन में किस हद तक डर पैदा कर सकती है। आम लोगों की कल्पना में यह धारणा जड़ें जमा चुकी है। परन्तु, अब तस्वीर बदल गई है। हम अब एक ऐसे मोड़ पर हैं जहाँ हम आकलन को अलग ढंग से देख रहे हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के लक्ष्य हमारे सामने हैं। एन.सी.एफ. ने इस तथ्य पर ध्यान दिया है कि अभी तक आकलन भय पर आधारित रहा है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। आकलन का उद्देश्य किसी बच्चे का दमन करना नहीं होना चाहिए। बच्चों पर तरह-तरह के ठप्पे लगा देना, जैसे कि "बेवकूफ और सुस्त" या "होशियार और चतुर", और उसके द्वारा उनको तिरस्कृत करना या सीमित कर देना, शिक्षा के मूलभूत सिद्धान्तों का खण्डन करता है।

जहाँ एक ओर शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) हर बच्चे को शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत लाने की बात करता है, वहीं दूसरी ओर, वह कक्षा 5 की परीक्षाओं के उपचारात्मक होने की बात करता है। यह पुराने प्रचलनों को पूरी तरह जड़ से समाप्त करना चाहता है और एक ऐसी शैक्षणिक व्यवस्था निर्मित करना चाहता है जो विद्यार्थियों की सीखने की क्षमताओं को मजबूती प्रदान करे। आर.टी.ई. विशेष रूप से कहता है कि बच्चों के ज्ञान तथा समझ को अधिक से अधिक बढ़ाकर उनके शारीरिक तथा मानसिक, दोनों प्रकार के गुणों का पोषण करके उनके सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जाना नितान्त आवश्यक है।

यदि बच्चों की क्षमताएँ बढ़ाने में वास्तव में हमारी दिलचस्पी है, तो हमें इस परिवर्तन के लिए शिक्षकों को तैयार करना होगा। कोई संस्था शिक्षा प्रदान करने में तभी सक्षम कहला सकती है जब विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हों - और वे इस सामर्थ्य को प्रदर्शित कर सकें। शिक्षकों को भी सीखने तथा निरन्तर अपने ज्ञान को अद्यतन बनाए रखने के लिए पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए। सरकार ने अनेक कार्यक्रम निर्मित किए हैं - जिनमें से कुछ हैं सर्व शिक्षा अभियान, जिला शिक्षा प्राधिकरण, संकुल संसाधन केन्द्र - जिनके द्वारा शिक्षक तथा विद्यार्थी स्वयं को नई से नई प्रवृत्तियों से अवगत बनाए रख सकते हैं। स्कूलों के प्रमुख इन सभी एजेन्सियों के सम्पर्क में रहते हैं।

सी.सी.ई. का आधारभूत सिद्धान्त है कि परीक्षण पद्धति से सारे दबाव और तनाव दूर किए जाना चाहिए और शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों का विविध प्रकार के मापदण्डों के आधार पर मूल्यांकन करने के अवसर मिलना चाहिए।

प्रश्न यह उठता है कि कोई शिक्षक इस बारे में कैसे आश्वस्त हो सकता है कि उसने किसी बच्चे के सीखने और प्रगति करने के सभी पहलुओं का आकलन कर लिया है? सी.सी.ई. एक अन्य प्रश्न भी उठाता है - यदि किसी बच्चे को असफल (फेल) नहीं माना जा सकता, तो फिर शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य क्या है? यदि बच्चों की प्रगति

का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता तो उनको इस व्यवस्था से क्यों गुजरना चाहिए? इस सवाल ने इस दृष्टिकोण को जन्म दिया है कि सीखना केवल तभी सम्भव है जब उसके उपरान्त आकलन होता हो। यह दृष्टिकोण पूरी तरह सही नहीं है : तनावपूर्ण माहौल के बजाय सीखना केवल पोषित करने वाले वातावरण में सम्भव होता है। एक और तर्क भी प्रस्तुत किया जाता है कि यदि विद्यार्थी स्कूल में परीक्षा व्यवस्था से सुपरिचित नहीं हो जाते तो वे बाद के जीवन में स्पर्धात्मक परीक्षाओं का सामना कैसे करेंगे?

सतत मूल्यांकन की धारणा यह है कि यह एक जारी रहने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षक को न केवल इसकी जाँच करते रहने में सक्षम बनाती है कि क्या पढ़ाया गया है, बल्कि इसकी भी कि क्या सीखा गया है। यह शिक्षकों को यह सुनिश्चित करने के लिए फीडबैक प्रदान करती है कि अवधारणात्मक चरण में सीखना वास्तव में घटित हुआ है। कक्षा के भीतर ही अवधारणा के तल पर सीखने पर जोर दिया जाना जरूरी है। उदाहरण के लिए, यह जानना महत्त्वपूर्ण होता है कि पढ़ने और लिखने के कौशल जल्दी सीख लिए गए हैं या नहीं। क्योंकि ये दो कौशल ही आगे सीखने की बुनियाद होते हैं। इसलिए किसी शिक्षक के लिए अपने विद्यार्थियों के कौशलों के बारे में आश्वस्त होना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि वे अपने विद्यार्थियों का ठीक आकलन करने में समर्थ हों। इसके लिए उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि विज्ञान की कक्षाओं के साथ होने वाले प्रायोगिक अभ्यास पढ़ाई गई अवधारणा का पर्याप्त रूप से विस्तार करते हों तथा बच्चे उन्हें समझ गए हों। परीक्षा से यह प्रकट होना चाहिए कि क्या बच्चों ने अवधारणाओं को समझा है और इसका परिणाम फिर यह दर्शाएगा कि कहीं वे अवधारणाएँ बच्चों के परिपक्वता चक्र की दृष्टि से बहुत जल्दी तो प्रस्तुत नहीं कर दी गईं। कक्षा में जो भी कुछ होता है परीक्षण की प्रक्रिया में उसकी समग्र परीक्षा होना चाहिए। सीखने का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू कक्षा में होने वाली चर्चाओं का स्तर होता है।

आजकल सीखना जरूरत से ज्यादा परीक्षा-उन्मुख हो गया है और परीक्षण की विधियाँ विद्यार्थी का पूरी तरह से आकलन नहीं करतीं। सभी परीक्षाओं की कार्यप्रणाली एक समान प्रतीत होती है, चाहे परीक्षा का विषय विज्ञान हो चाहे भाषा हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमें परीक्षा को विषय के अनुरूप बनाना होगा, जैसी कि एन.सी.एफ. अनुशंसा करता है। जहाँ तक भाषा (हिन्दी) का सम्बन्ध है, उसके लिए उपयुक्त आकलन विधियाँ निर्मित किए जाने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, पढ़ने की क्षमता का आकलन लिखित परीक्षा या लिखित कार्य द्वारा किया जाना उचित नहीं है। शिक्षकों को बच्चों के पढ़ने के स्तरों का मूल्यांकन तब करना होगा जब वे कक्षा में पढ़कर सुनाते हैं। इसकी कार्यप्रणाली को यह सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चे को पढ़कर सुनाने का अवसर मिले - जो यह देखते हुए, कि कुछ स्कूलों की प्रत्येक कक्षा में 50-60 बच्चे होते हैं, एक कठिन कार्य है। पढ़ने के स्तरों की जाँच करने का एक सुझाव अलग-अलग समूहों के लिए साप्ताहिक या पाक्षिक लघु-परीक्षाएँ निर्मित करना और फिर उनके द्वारा बच्चों की प्रगति का आकलन करना है। लिखने के कौशलों में प्रगति का आकलन प्रत्येक बच्चे के लिए पोर्टफोलियो, जिसमें व्यक्तिगत लेखन या चित्रण के नमूने रखे जा सकते हैं, निर्मित करने के द्वारा किया जा सकता है। कापियों में लिखित कार्य करना एक अन्य साधन है जिसके द्वारा बच्चे के कार्य का रिकार्ड रखा जा सकता है।

सी.सी.ई. की एक आलोचना यह है कि यह शिक्षक का बहुत-सा समय लेता है। यह समझा जाना जरूरी है कि सी.सी.ई. कक्षा की गतिविधि का अभिन्न अंग है, और यदि इसे पाठ के साथ किया जाए तो यह ज्यादा आसान प्रक्रिया बन जाती है। कुल मिलाकर सीखने-सिखाने का अनुभव बहुत महत्त्वपूर्ण होता है जिसे किसी भी मोड़ पर पटरी से नहीं उतारा जाना चाहिए।

***के. आर. शर्मा*** *देहरादून में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ काम करते हैं। इससे पहले उन्होंने 20 वर्षों तक मध्यप्रदेश में एकलव्य में काम किया। वे विद्याभवन व अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिका 'शिक्षा की बुनियाद' की सम्पादकीय टीम में हैं। वे शिक्षा और समाज से सम्बन्धित विषयों पर नियमित रूप से लिखते रहते हैं। उन्होंने एन.सी ई.आर.टी. के लिए एक पुस्तक लिखी है। उनसे kr.sharma@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद :*** *सत्येन्द्र त्रिपाठी*